International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-253x, (Print), E-ISSN 2320-544x, Issue-3, Vol-I, March-2013

शोध पत्र- हिन्दी

राजनैतिक कबीर नागार्जुन

* डॉ. संजीव खैमरिया

* अतिथि व्याख्यता हिन्दी, शा. कन्या महाविद्यालय, शिवपुरी, म.प्र.

नागार्जुन हिन्दी साहित्य के सबसे प्रखर जनवादी कवि माने जाते हैं। जन से जुड़ी हर बात को कहने में और लूट की राजनीति को तार तार करने में उन्होंने गजब के साहस का परिचय दिया है। जिस प्रकार कबीर ने अपने जमाने में किसी भी गलत बात को नहीं माना और शासन एवं समाज के अत्याचारों के वावजूद भी अपनी बात को कहने में कोई संकोच नहीं किया। कबीर और नागार्जुन में कई समानताओं को मद्देनजर रखते हुऐ नागार्जुन को राजनैतिक कबीर कहा जा सकता है क्योकि उनकी वाणी में कबीर की तरह ही अनुचित के खिलाफ बोलने का साहस और अखंड आत्मविश्वास है वहीं उनके स्वरों में व्यंग्य की पैनी धार भी है। डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सैना के शब्दों में –[1]

''नागार्जुन का सच्चा कवि विद्रोह कर उठा है, उसने क्रांति का शंख फूंक दिया है और वह सिंहनाद करता हुआ कभी आर्थिक वैषम्य उत्पन्न करने वाले शोषकों को फटकारता है, कभी अन्यायी एवं अत्याचारी साम्राज्यवादियों को डांटता है कभी श्रमिकों को पीड़ा देने वाले पूंजीवादियों को ललकारता है, कभी देश के नेताओं के काले कारनामे का भंडाफोड़ करता है।.....भ्रष्ट नेताओं का डटकर विरोध करता है पद दलित मानवता को उपर उठाता है।''[1]

2'' हृदय पर चोट करने वाले एवं कर्तव्य का स्मरण दिलाने वाले व्यंग्य लिखकर न केवल नागार्जुन ने अपने विद्रोही स्वभाव का आक्रोश एवं क्षोभ व्यक्त किया है अपितु ऐसा मार्मिक एवं मनोरंजक व्यंग्य काव्य लिखा है जो अपनी सहजता नवीनता एवं मौलिकता के कारण अनुपम, अद्वितीय है।''[2]

प्रसिद्ध बौद्धिक समालोचक डॉ. नामवर सिंह के शब्दों मे–'' व्यंगय की विदग्धता ने ही नागार्जुन की अनेक तात्कालिक कविताओं को कालजयी बना दिया है .....यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिंदी कविता में नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक नहीं हुआ। नागार्जुन के काव्य में व्यक्तियों के इतने व्यंग्यचित्र हैं कि उनका एक विशाल एलबम तैयार किया जा सकता है।''वर्जीनिया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में उनका परिचय इस प्रकार दिया गया है कि उनकी प्रखर अर्थबोध की कविताओं से स्वतंत्रता के पश्चात के वास्तविक इतिहास और राजनैतिक यथार्थ को जाना जा सकता है। उदय प्रकाश ने इसे मानते हुऐ कहा है कि बाबा नागार्जुन की कविताऐं प्रख्यात इतिहास चिंतक डी.डी. कौसाम्बी की इस प्रस्थापना का कि ''इतिहास लेखन के लिये काव्यात्मक प्रमाणों को आधार नहीं बनाया जाना चाहिये'' अपवाद सिद्ध होती है। वे कहते हैं कि हम उनकी रचनाओं के प्रमाणों से देश और समाज के पिछले कई दशकों के इतिहास का पुनर्लेखन कर सकते हैं।''

नागार्जुन उस अव्यवस्था पर सीधा प्रहार करते हैं जिनके बारे में कहने का शायद ही किसी में साहस हो क्योंकि उन्होंने अपनी दृष्टि प्रमुख रूप से जन पर रखी है और आमजन जिन पीड़ाओं को दबाये रखता है उसे निर्भयता से वे कह जाते हैं ऐसा लगता है कि रोजमर्रा की जन पीड़ा को उन्होंने रोज की डायरी में उतारा हो और निरंतर उसे अद्यतन किया हो। किंतु फिर भी हर कविता ताजी ही रहती है। एजरा पाउंड के शब्दों में कहा जाये तो नागार्जुन की कविता ऐसी खबर है जो हमेशा ताजा ही रहती है। वह अखबारी खबर की तरह कभी वासी नहीं होती। हर राजनैतिक विसंगति पर इस तरह खुलकर बोलने का गजब का साहस उनमें है। सत्ता पर कितना ही बड़ा तानाशाह या निरंकुश शासक हो उन्होंने किसी को नहीं बख्शा। शासक कोई हो ,कैसा हो वे किसी से नहीं डरे सदा देश की जनता के हित की बात उन्होंने की है।

साधारणतः आमजन की बात करने वाले को प्रगतिवादी विचारधारा में संकुचित किया जाता है किंतु नागार्जुन के लिये कोई विचारधारा अंतिम सत्य नहीं है बल्कि जन प्रमुख है। मौका पड़ने पर साम्यवाद की दोगली नीतियों पर भी भीषण प्रहार करने से नहीं चूके हैं। देश और देश के आमजनों पर किसी भी संकट पर उन्होंने कोई पक्षपात नहीं किया है। जब साम्यवाद से प्रभावित और चीन के मॉडल को आदर्श मानने वाले साहित्यकार या कथित बुद्धिजीवी चीन आक्रमण पर चुप थे तब भी नागार्जुन जिनकी वाणी में सर्वहारा और किसानों के लिये सर्वाधिक संवेदना है उन्होंने दमदार तरीके से चीन को ललकारा।

अर्थात् वे किसी वाद के कवि नहीं है वे तो कबीर की तरह ही खरा बोलने वाले और हर हाल में जन के मूक रूदन को विद्रोह के स्वर देने वाले हैं। गांधी के नाम पर किस हद तक लूट मची है जहां हर प्रकार का भ्रष्टाचार गांधी के नाम पर ही होता है और विरोध करने वाले को ही गांधीवाद की आड़ लेकर चुप कराया जाता है और राजघाट पर घड़ियाली आंसू दिखाकर बड़ा गांधीवादी बना जाता है–'

' बेचबेचकर गांधी जी का नाम बटोरो वोट बैंक बैलेंस बढ़ाओ राजघाट पर बाप की वेदी के आगे अश्रु बहाओ''

गांधीजी स्वयं अपने सामने ही समझ चुके थे कि उनके विचारों की आड़ लेकर कैसे सब अपने स्वार्थ साध रहे हैं और देश के लिये जिस संगठन को वे आदर्शों के सहारे जोड़े हुऐ हैं वही अब सत्ता के लिये अंधा और भूखा हो गया है किंतु गांधी भी खुद इस लूट को नहीं रोक सके क्योंकि उनके नाम पर सत्ता पाने वालों ने गांधी को ही किनारे कर दिया इसीलिये नागार्जुन ऐसे चतुर सुजानों को गांधी का भी ताऊ मानते हैं–

3''
बापू के भी ताऊ निकले तीनों बंदर बापू के,
सयरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बंदर बापू के
सौवीं बरसी मना रहें हैं खुश है तीनों बंदर बापू के,
बापू को ही बना रहे हैं तीनों बंदर बापू के,
सेठों का हित साध रहे हैं तीनों बंदर बापू के, युग
पर प्रवचन लाद रहे हैं तीनों बंदर बापू के, सत्य
अहिंसा फ़ांक रहे हें तीनों बंदर बापू के
मुस्काते हें आंखें मीचे तीनों बंदर बापू के,
मूंड रहे दुनिया जहान को तीनों बंदर बापू के,
चिढा रहे हैं आसमान को तीनों बंदर बापू के,
करे रात दिन टूर हवाई तीनों बंदर बापू के,
बदल बदल कर चखें मलाई तीनों बंदर बापू के,
हमें अंगूठा दिखा रहे हें तीनों बंदर बापू के,
कैसी हिकमत सिखा रहे हें तीनों बंदर बापू के,''[3]

देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के संबंध में उनकी कविता की प्रखरता देखिये–

'' वतन बेचकर पंडित नेहरू फूले नहीं समाते हैं,
बेशर्मी की हद है फ़िर भी बातें बड़ी बनाते हैं।
अंग्रेजी,अमरीकी जोंकों की बरात में हैं शामिल,
फ़िर भी बापू की समाधि पर झुक झुक फूल चढ़ाते हैं''

इंदिरा गांधी के निरंकुश शासन में भी उनका मुंह बंद नहीं किया जा सका। निरंकुश सत्ताधिकार भी उन्हें खरी कहने से नहीं रोक सका–

'' इंदु जी, इंदु जी क्या हुआ आपको, क्या हुआ आप को?
आपकी चाल ढ़ाल देख देख लोग हैं दंग ,
हुकूमती नशे का वाह वाह कैसा चढ़ा रंग
सच सच बताओ भी क्या हुआ आप को
यों भला भूल गईं बाप को!
छात्रों के लहू का चस्का लगा आपको,
काले चिकने माल का मस्का लगा आपको,
किसी ने टोका तो ठस्का लगा आपको,
अंट शंट बक रहीं जुनून में ,
शासन का नशा घुला खून में फूल से भी हल्का समझ
लिया आपने हत्या के पाप को!
इंदु जी क्या हुआ आपको?''[4]

एवं

'' आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी,
यह तो नयी नयी दिल्ली है दिल में इसे उतार लो ,
एक बात कह दूं मलका थोड़ी सी लाज उधार लो
बापू को मत छेड़ो अपने पुरखों से उपहार लो
जय ब्रिटेन की जय हो इस कलिकाल की !
आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी
रफ़ू करेंगे फटे पुरानें जाल की ,
यही हुई है राय जवाहरलाल की
आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी!''[5]

राजीव गांधी के शासन में जब बोफोर्स तोप घोटाला सामने आया तब भी निडर होकर नागार्जुन सामने आये–

'' कच्ची हजम करोगे पक्की हजम करोगे
चूल्हा हजम करागे चक्की हजम करोगे
बोफोर्स की दलाली गुपचुप हजम करोगे
नित राजघाट जाकर बापू भजन करोगे''[6]

जो देशवासी गांधी के आदर्शों को मानकर ये अपेक्षा कर रहे थे कि उनके आदर्शों का कथित अनुसरण करने वाले नेतागण गांधी के सपनों का रामराज्य लायेंगे उनके सपनों का क्या हश्र हुआ यह भी नागार्जुन ने खूब उभारा है–

''रामराज में अबकी रावण नंगा होकर नाचा है
शक्ल सूरत तो वही है भैया बदला केवल ढांचा है,
नेताओं की नीयत बदली फ़िर तो अपने ही हाथों
भारतमाता के गालों पर कसकर पड़ा तमाचा है'
''देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से
मिले न रोटी रोजी भटके दर दर बने भिखारी से
स्वाभिमान सम्मान कहां है होली है इंसान की
बदला सत्य अहिंसा बदली लाठी गोली डंडे है
कानूनों की सड़ी लाश पर प्रजातंत्र के झंडे हैं।''

नेताओं ने पूंजीपतियों से समझौता कर लिया है और सरकार की योजनायें भी उनको कई गुना मुनाफे दिलाने वाली हैं ऐसे में देश में एक और तो वैभव का विलास है दसरी ओर दरिद्रता का नंगा नाच है और जब कोई आवाज उठती है तब उसे कुचल दिया जाता है। क्या यही आजादी देश ने पाई थी?

''जमीदार हैं साहूकार हें बनिया हैं व्यापारी हैं
अंदर अंदर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी हैं''
खादी ने मलमल से अपनी सांठगांठ कर डाली है,
बिड़ला टाटा डालमिया की तीसों दिन दीवाली है
.माताओं पर बहिनों पर घोड़े दौड़ाये जाते हैं
बच्चे बूढ़े बाप तक न छूटते सताऐ जाते हैं,
मार पीट है लूट पाट है तहस नहस बरबादी है
जोर जुलुम है जेल सेल है वाह खूब आजादी है''
सपने में भी सच न बोलना बरना पकड़े जाओगे
भैया लखनउ दिल्ली पहुंचो मेवा मिसरी पाओगे
मालमिलेगा रेत सको,यदि गला मजूर,किसानों का,
हम मरभुक्खों से क्या होगा,चरण गहो श्रीमानों का''[7]

पंच वर्षीय योजनाओं में किस हद तक भ्रष्टाचार है कि जो काम 1 माह में होना चाहिये उसके लिये पांच वर्षों तक प्रतीक्षा करनी होती है। वास्तव में ये पंचवर्षीय योजनायें पांच साल तक सरकार में टिके रहने की योजनायें हैं–

'पांच साल में कलियां चटकी पांच बरस में होंगे फूल
अपने ही हाथों से झोंको यों अपनी आंखों में धूल,
''पांच वर्ष की बनी योजना एक नहीं दो तीन, कागज
के फूलों ने लेली सबकी खुशबू छीन
बलिहारी कागजी खुशी की क्यों न बजायें बीन,
फटे बांध से बालू बोले हम भी हैं स्वाधीन,
अश्वमेध का घोड़ा दौड़ा चित है चारों नाल,
कौन कहेगा आजादी के बीते तेरह साल''

भारत माता के पूतों की आपसी फूट ने उसके सभी पूतों को मिटा दिया और अब उसके लिये मरने मिटने वाला कोई भी पूत नहीं बच पाया है इसे व्यक्त करता हुआ तीखा व्यंग्य देखिये–

''पांच पूत भारतमाता के दुश्मन था खूंखार,

गोली खाकर एक मर गया बाकी रह गये चार,
चार पूत भारतमाता के चारों चतुर प्रवीन,
देश निकाला मिला एक को बाकी रह गये तीन,
तीन पूत भारत माता के लड़ने लग गये वो,
अलग हो गया उधर एक अब बाकी बच गये दो
दो बेटे भारतमाता के छोड़ पुरानी टेक,
चिपक गया एक गद्दी से बाकी बच गया एक
पूत भारतमाता का कांधे पर है झंडा,
पुलिस पकड़कर जेल ले गयी बाकी बच गया अंडा''[8]

नेताओं का एक रूपक जो नागार्जुन ने दिखाया वह आज कितना वास्तविक लगता है जब कोई सजा धजा मंत्री किसी पिछड़े दीन हीन गांव में जाकर अपनेपन का स्वांग करता है और उनके भोलेपन एवं बेबसी और निश्चित धोखा देने वाली अपनी कुटिलता पर मुस्काता है–

'' अभी अभी उस दिन मिनिस्टर आये थे, बत्तीसी दिखलाई थी
वादे दुहराये थे, भाषा लटपटाई थी नैन शरमाये थे
छपा हुआ भाषण भी पढ़ नहीं पाये थे,
जाते वक्त हाथ जोड़ कैसा मुसकाये थे''[9]

जनप्रतिनिधियों की सभा तो देखिये जिन में मानवों जैसा एक भी गुण कवि को नजर नहीं आ रहा है फिर उसे कैसे जनप्रतिनिधियों की सभा कहा जा सकता है––

''देखा हमने चिड़िया खाना सुना चीखना और चिल्लाना
धवल टोपियां फेंक रहे थे ,मगर गधों से रेंक रहे थे,
धोती कुर्ते में थे हाथी ,सुअर ऊंट थे जिनके साथी,
बैलों के पीछे अनबोले, मचल रहे थे सांप सपोले, बार पास था
कार पास थी बुढ़िया कंगारू उदास थी''

इन सभी उदाहरणों से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि नागार्जुन ने अपने वर्तमान की राजनीति को पूरी तरह नग्न कर दिया है। इस प्रकार की काव्य सर्जना को देखकर कहना उचित ही है कि नागार्जुन राजनैतिक कबीर हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि– डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सैना विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृ. 454–455
2. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि– डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सैना विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृ. 475
3. तीनों बंदर बापू के –कविता–नागार्जुन।
4. इंदुजी क्या हुआ आपको–कविता–खिचड़ी विप्लव देखा हमने काव्य संग्रह –नागार्जुन।
5. आओ रानी–कविता–नागार्जुन।
6. गुपचुप हजम करोगे..कविता–नागार्जुन।
7. सच न बोलना–कविता–नागार्जुन।
8. बाकी बच गया अंडा–कविता–नागार्जुन।
9. अभी अभी उस दिन–कविता–नागार्जुन।